

Padma Shri



SHRI SANKARANARAYANA MENON, CHUNDAYIL

Shri Gurukkal Sankara Narayana Menon is an established Kalaripayattu (an ancient Bharatiya art of defence and physical wellbeing) Guru at Vallabhata Kalari Institution in Chavakkad, Kerala.

2. Born on 15th February, 1929, Shri Menon started his training in Kalaripayattu at the age of 7 from his family and mastered a high level of proficiency as a practitioner, performer and teacher for over 60 years of teaching experience. He has also received training in "Kalari Manna Chikilsa". He was born as the third son of Late Gurukkal Sankunni Panicker, who was the last member of the Mudavangattil family who were great deponents of Kalaripayattu and also held the 'Gunisthanam' of the Vettath Royal family decorating the title of commander-in chief and on whom the title of Panicker was conferred by the Vettath Rajah, a Ruler appointed by the Zamorin Raja of Kozhikode.

3. Shri Menon is also a Registered Medical Practitioner of 'Ayurveda & Unani'. He also treats patients who come with physical and muscular ailments by applying medicated oils and performing various massage techniques. In 1957, Gurukkal Sankunni Panicker established the present Kalari (training center, SNGS Vallabhatia Kalari Sangam) at Chavakkad, Trichur Kerala, based on a rigorous and fluid physical training system. Vallabhata Kalari Chavakkad is conducting Kalaripayattu classes, workshops, demonstrations and has worked with renowned dancers for choreographic performances held in India and many of the European Countries, USA, China, Singapore and Srilanka. Even at the age of 93 he delivers the expertise and knowledge to the upcoming generations which has reached the 9th generation of Vallabhata Kalari Sangham capable of preserving and propagating the wellness and value of Kalaripayattu.

4. Shri Menon is recipient of numerous awards and honours including 'Suvama Mudra Award' in 1995 by Kerala Kalaripayattu Association; 'Sahasramahodadi Award' in 2007 in memory of legend Poomully Neelakandan Namboothiripadu, well known for his wisdom and patronage in Kalarippayattu, Ayurveda, Yoga etc; Lifetime Achievement Award by Indian Kalaripayattu Federation affiliated to the Ministry of Youth Affairs and Sports, Govt. of India. He also received honours from Chairman of Chavakkad Municipality in 1989 for the teaching of Kalaripayattu to the general Public; Kerala Kalamandalam Silver Jubilee celebration in 1990 for propagation of Kalaripayattu and preserving the ancient art of India; Kerala Kalarippayattu Association in 2008 in connection with 50th Anniversary for his services; Thrissur District Kalaripayattu Association in 2011. He was also honored by the Governor of Kerala Shri. P. Sadasivam on the occasion of Indian Sports Day (Fit India) .

पद्म श्री



श्री शंकरानारायणा मेनोन, चूंडायिल

श्री शंकरानारायणा मेनोन केरल के चावक्कड़ में वल्लभट्ट कलारी संस्थान के एक प्रतिष्ठित कलारीपयट्टू (आत्मरक्षा और शारीरिक स्वास्थ्य की एक प्राचीन भारतीय कला) गुरु हैं।

2. 15 फरवरी, 1929 को जन्मे, श्री मेनोन ने 7 साल की आयु से अपने परिवार से कलारीपयट्टू का प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू किया और 60 से अधिक वर्ष के प्रशिक्षण अनुभव के बलबूते पेशेवर कलाकार और शिक्षक के रूप में उच्च दक्षता प्राप्त की है। उन्होंने "कलारी मन्ना चिकिल्सा" भी सीखा हुआ है। उनका जन्म स्वर्गीय गुरुक्कल शंकुन्नी पणिकर के तीसरे पुत्र के रूप में हुआ था। स्वर्गीय गुरुक्कल शंकुन्नी पणिकर मुदावंगट्टिल परिवार के अंतिम सदस्य थे जो कलारीपयट्टू के बड़े परीक्षक थे और वेद्वथ राजपरिवार का 'गुणिस्थानम' पद संभालते थे। उन्हें कमांडर-इन-चीफ की उपाधि से सुशोभित किया गया था और उन्हें कोझीकोड के ज़मोरिन राजा द्वारा नियुक्त शासक वेद्वथ राजा द्वारा पणिकर की उपाधि भी प्रदान की गई थी।

3. श्री मेनोन 'आयुर्वेद और यूनानी' के पंजीकृत चिकित्सक भी हैं। वह शारीरिक और मांसपेशियों के रोगियों का इलाज औषधीय तेल और मालिश की विभिन्न विधियों से करते हैं। वर्ष 1957 में, गुरुक्कल शंकुन्नी पणिकर ने कठोर और हल्की शारीरिक प्रशिक्षण प्रणाली के आधार पर, वर्तमान कलारी (प्रशिक्षण केंद्र, एसएनजीएस वल्लभट्ट कलारी संगम) की केरल के त्रिचुर जिले के चावक्कड़ में स्थापना की। वल्लभट्ट कलारी चावक्कड़ कलारीपयट्टू कक्षाओं, कार्यशालाओं, प्रदर्शनों का आयोजन कर रहा है और यह भारत और कई यूरोपीय देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, सिंगापुर और श्रीलंका में आयोजित कोरियोग्राफिक प्रदर्शनों में कई प्रसिद्ध नृत्यांगनाओं के साथ काम कर चुका है। वह 93 वर्ष की आयु में भी आने वाली पीढ़ियों को विशेषज्ञता और ज्ञान प्रदान करते हैं और इसकी विरासत कलारीपयट्टू के कल्याण और मूल्यों को संरक्षित और प्रचारित करने में संलग्न वल्लभट्ट कलारी संघम की 9वीं पीढ़ी तक पहुंच गई है।

4. श्री मेनोन को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 1995 में केरल कलारीपयट्टू एसोसिएशन द्वारा 'सुवामा मुद्रा पुरस्कार'; 2007 में कलारिपयट्टू, आयुर्वेद, योग आदि में ज्ञान और संरक्षण के लिए विख्यात विभूति पूमली नीलकंदन नंबूतिरिपादु की स्मृति में 'सहस्र महोदधि पुरस्कार'; युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार से संबद्ध भारतीय कलारीपयट्टू फेडरेशन द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड शामिल हैं। उन्हें आम जनता को कलारीपयट्टू कला की शिक्षा प्रदान करने के लिए वर्ष 1989 में चावक्कड़ नगर पालिका के अध्यक्ष द्वारा भी सम्मानित किया गया था। उन्हें कलारीपयट्टू के प्रचार-प्रसार और भारत की प्राचीन कला के संरक्षण के लिए वर्ष 1990 में केरल कलामंडलम रजत जयंती समारोह के अवसर पर और 2008 में केरल कलारिपयट्टू एसोसिएशन की 50 वीं जयंती के अवसर पर उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया था तथा वर्ष 2011 में त्रिशूर जिला कलारीपयट्टू एसोसिएशन द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया था। उन्हें केरल के राज्यपाल श्री पी. सदाशिवम द्वारा भारतीय खेल दिवस (फिट इंडिया) के अवसर पर भी सम्मानित किया गया था।